नव भारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

भारत के आत्मनिर्भरता की ओर दृढ़ कदम

भारत लंबे समय तक रक्षा उपकरणों और हथियारों के लिए आयात पर निर्भर रहा है. यह स्थिति न केवल रणनीतिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण थी बल्कि विदेशी मुद्रा भंडार पर भी बोझ डालती थी. लेकिन पिछले एक दशक में तस्वीर बदलने लगी है. केंद्र सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य को रक्षा क्षेत्र में प्राथमिकता दी है और उसके परिणाम अब ज़मीन पर दिखाई देने लगे हैं.

हाल ही में भारत ने 'अनंत शस्त्र' का सफल परीक्षण किया, जो स्वदेशी अनुसंधान और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है. यह परीक्षण इस बात का प्रतीक है कि भारतीय वैज्ञानिक और इंजीनियर अब उच्च तकनीक वाले हथियार प्रणालियों के निर्माण में पूरी तरह सक्षम हो रहे हैं. 'अनंत शस्त्र' का सफल प्रदर्शन केवल तकनीकी विजय नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता के संकल्प की ठोस झलक भी है.

रक्षा उत्पादन को गति देने के लिए सरकार ने 'मेक इन इंडिया' और 'डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर' जैसी योजनाओं की शुरुआत की. उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में स्थापित कॉरिडोर अब धीरे-धीरे रक्षा उद्योग का केंद्र बन रहे हैं. छोटे और मध्यम उद्योग (एमएसएमई) से लेकर बड़े औद्योगिक घरानों तक, सभी इस क्षेत्र में भागीदारी कर रहे हैं. निजी क्षेत्र की मौजूदगी ने पारंपरिक रक्षा उत्पादन मॉडल को नया आयाम दिया है. टाटा, एलएंडटी, महिंद्रा और अदानी जैसे समूह अब रक्षा उपकरण निर्माण और निर्यात में सक्रिय हो चुके हैं.

सरकारी कंपनियों का पुनर्गठन भी उल्लेखनीय है. हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) और भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड जैसे सार्वजनिक उपक्रम अब आधुनिक तकनीक के साथ वैश्विक प्रतिस्पर्धा में उतर रहे हैं. ड्रोन, मिसाइल, तोप और हल्के टैंक जैसे उत्पादों का स्वदेशीकरण रक्षा निर्यात को नई ऊंचाई दे रहा है. आज भारत 85 से अधिक देशों को रक्षा उपकरण निर्यात कर रहा है और यह आंकड़ा तेजी से बढ़ रहा है.

सुरक्षा परिषद की रिपोर्ट बताती है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक रहा है. लेकिन अब परिदृश्य बदल रहा है. आयात पर निर्भरता घटाने और निर्यात बढ़ाने का लक्ष्य 'डिफेंस एक्सपोर्ट्स 2047 विज़न' के माध्यम से स्पष्ट किया गया है. हाल ही में अमेरिका, अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय हथियारों की बढ़ती मांग इसी दिशा का संकेत है.

फिर भी चुनौतियाँ मौजूद हैं. अनुसंधान एवं विकास पर पर्याप्त निवेश, तकनीकी हस्तांतरण की सीमाएँ, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसी बाधाएँ सामने आती हैं. इसके बावजूद, यदि नीति निर्धारण और क्रियान्वयन में निरंतरता बनी रही तो भारत अगले दो दशकों में रक्षा उत्पादन का वैश्विक केंद्र बन सकता है.

'अनंत शस्त्र' जैसे सफल परीक्षण हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि आत्मनिर्भर भारत का सपना केवल नारा नहीं, बल्कि वास्तविकता में बदल रहा है. स्वदेशी रक्षा उत्पादन न केवल भारत की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा बल्कि उसे वैश्विक हथियार बाज़ार में भी सशक्त बनाएगा.

मोदी बेमिसाल नेता-कार्यकुशल कर्मयोगी

हरदीप एस पुरी

> असम के नुमालीगढ़ में भारत के पहले बांस-आधारित 2जी इथेनॉल संयंत्र के शुभारंभ के दौरान मुझे एक बार फिर इसका साक्षी बनने का सौभाग्य मिला. इंजीनियरों, किसानों और तकनीकी विशेषज्ञों के साथ खड़े होकर, प्रधानमंत्री ने सीधे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रश्न पूछे - किसानों को भुगतान उसी दिन कैसे प्राप्त होगा; क्या आनुवंशिक इंजीनियरिंग से ऐसा बाँस तैयार किया जा सकता है, जो तेज़ी से बढ़ता है और गांठों के बीच बाँस के तने की लंबाई बढ़ाता है; क्या महत्वपूर्ण एंजाइमों का स्वदेशीकरण किया जा सकता है; क्या बाँस के हर घटक—तना, पत्ती, अवशेष का इथेनॉल से लेकर फुरफुरल और ग्रीन एसिटिक एसिड तक— आर्थिक उपयोग किया जा रहा है, चर्चा केवल तकनीक तक ही सीमित नहीं थी. यह लॉजिस्टिक्स, आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन और वैश्विक कार्बन फुटप्रिंट तक व्याप्त रही. अंतर्राष्ट्रीय वार्ताओं में भाग लेने वाले व्यक्ति के रूप में, मैंने इस पद्धति को तुरंत पहचान लिया- संक्षिप्त विवरण की स्पष्टता, विवरण में सटीकता और इस बात पर ज़ोर कि कतार में खड़ा अंतिम व्यक्ति पहला लाभार्थी होना चाहिए.

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की करिश्माई उपस्थिति और संगठनात्मक नेतृत्व की भरपूर प्रशंसा की गई है, लेकिन जिस बात को कम ही लोग जानते और समझते हैं, वह यह है कि उनकी कठोर पेशेवर प्रतिबद्धता ही उनके काम की विशेषता है. गुजरात के मुख्यमंत्री और भारत के प्रधानमंत्री के रूप में पिछले ढाई दशकों में उनकी कार्यशैली में निरंतर पेशेवर नैतिकता विकसित हुई है.

जो बात उन्हें औरों से अलग बनाती है, वह प्रदर्शन की प्रतिभा नहीं, बल्कि ऐसा अनुशासन है, जो विजन को टिकाऊ प्रणालियों में तब्दील करता है. भारतीय मुहावरे में कहा जाए, तो वह कर्मयोगी हैं- कर्तव्य पर आधारित ऐसा कर्म, जिसका आकलन जमीनी स्तर पर आए बदलाव से होता है.

यही नैतिकता इस वर्ष लाल किले से उनके स्वतंत्रता दिवस के संबोधन का आधार रही. उनके इस भाषण में उपलब्धियों का लेखा-जोखा कम और मिल-जुलकर कार्य करने का चार्टर ज़्यादा प्रस्तुत किया गया- नागरिकों, वैज्ञानिकों, स्टार्ट-अप्स और राज्यों को विकसित भारत के सह-लेखक के रूप में आमंत्रित किया गया. गहन प्रौद्योगिकी, स्वच्छ विकास और मजबूत आपूर्ति श्रृंखलाओं में महत्वाकांक्षाओं को कोरे शब्दों में नहीं, बल्कि व्यावहारिक कार्यक्रमों के रूप में प्रस्तुत किया गया. इन कार्यक्रमों को जनभागीदारी, यानी बुनियादी ढाँचे का निर्माण करने वाले राज्य और उद्यमी लोगों के बीच की साझेदारी को एक पद्धति के रूप में प्रस्तुत किया गया.

हाल ही में किया गया जीएसटी ढाँचे का सरलीकरण इसी पद्धति को दर्शाता है. स्लैब को कम करके और अवरोधों को दूर करके, परिषद ने छोटी फर्मों के लिए अनुपालन लागत कम की है और इसका लाभ सीधे घर-घर तक पहुँचाने की गति बढ़ाई है. प्रधानमंत्री का ध्यान संक्षिप्त राजस्व वक्रों पर नहीं, बल्कि इस बात पर था कि क्या आम नागरिक या छोटा व्यापारी इस बदलाव को जल्दी महसूस कर पाएगा या नहीं. यह स्वाभाविक प्रवृत्ति उस सहकारी संघवाद को प्रतिध्वनित करती है, जिसने जीएसटी परिषद का मार्गदर्शन किया है- राज्य और केंद्र गहन विचार-विमर्श करते हैं, लेकिन सभी एक ऐसी प्रणाली के भीतर काम करते हैं जो स्थिर रहने के बजाय परिस्थितियों के अनुकूल ढल जाती है. नीति को एक जीवंत साधन माना जाता है, जो कागज़ पर समरूपता के लिए संरक्षित एक स्मारक के रूप में न रहकर अर्थव्यवस्था की लय के अनुरूप ढाली गई है.

यही वह व्यावसायिक दृष्टिकोण है, जो अमेरिका से वापसी की 15 घंटे की लंबी उड़ान के बाद देर रात बिना किसी सूचना के निर्माणाधीन नए संसद भवन के गेट पर पहुंचने की बात को समझाता है.

हाल ही में मैंने प्रधानमंत्री से पंद्रह मिनट का समय माँगा था. इस दौरान हुई चर्चा के दौरान मैं उनकी व्यापक समझ और बहुआयामी दृष्टिकोण — एक ही फ्रेम में समाहित बारीक से बारीक विवरण और व्यापक संपर्क देखकर आश्चर्य चकित रह गया. यह बैठक पैंतालीस मिनट चली. सहकर्मियों ने बाद में मुझे बताया कि उन्होंने इसकी तैयारी में दो घंटे से ज़्यादा समय लगाया, नोट्स, आँकड़े और प्रतिवादों का अध्ययन किया. तैयारी का यह स्तर कोई अपवाद नहीं है; यह कार्य का वह मानदंड है, जिसे उन्होंने स्वयं के लिए निर्धारित किया है और जिसकी वह व्यवस्था से भी अपेक्षा रखते हैं. निरंतर तैयारी की यही आदत सुनिश्चित करती है कि निर्णय ठोस और भविष्य के लिए उपयुक्त हों.

भारत की हाल की प्रगति का अधिकांश आधार उन व्यवस्थाओं और प्रणालियों पर टिका है, जिन्हें हमारे नागरिकों की गरिमा सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है. डिजिटल पहचान, सार्वभौमिक बैंक खाते और रीयल-टाइम भुगतान की त्रिमूर्ति ने समावेशन को बुनियादी ढाँचे में बदल दिया है. लाभ सीधे सत्यापित नागरिकों तक पहुँचते हैं; उचित व्यवस्था के कारण गड़बड़ियाँ कम होती हैं; छोटे व्यवसायों को अनुमानित नकदी प्रवाह मिलता है; और नीतियाँ धारणाओं की बजाय आँकड़ों पर आधारित होती हैं.

लेखक केन्द्रीय पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हैं.

महाकौशल की डायरी

भाजपा ग्रामीण कार्यकारिणी में सांसद की पैठ का दिखा असर

अविनाश दीक्षित

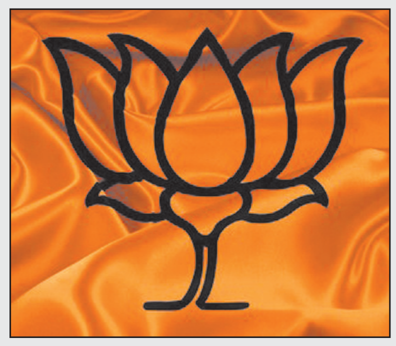

जिस प्रकार नगर कांग्रेस कमेटी ने ग्रामीण में हार का स्वाद चखकर अनुभव ले चुके संजय यादव को अध्यक्ष बनाकर दांव खेला था, ठीक उसी को आगे बढ़ाते हुए भारतीय जनता पार्टी ने जिला ग्रामीण की कार्यकारिणी में 80 फीसदी ऐसे पुराने चेहरों पर दांव खेला है जो पहले संगठन में जिम्मेदारी संभाल चुके हैं. नई सूची जारी होते ही भाजपा ग्रामीण के उन नेताओं के खेमे में मायूसी नजर आई जो संगठन में किसी न किसी पद की आस लेकर बैठे थे. उधर पार्टी के कुछ दिग्गज नेता, विधायकों के समर्थकों में भी नाराजगी देखी गई.. वजह जिला ग्रामीण में उन्हें पद नहीं मिला. राजनैतिक जानकारों की माने तो भाजपा ग्रामीण की कार्यकारिणी की जारी सूची में सांसद आशीष दुबे की पकड़ बिल्कुल साफ नजर आई है क्योंकि अधिकांश नवनियुक्त पदाधिकारी इनसे जुड़े माने जा रहे हैं, इनमें उपाध्यक्ष, जिला महामंत्री के पद शामिल हैं.

वहीं भाजपा विधायकों के चहेतों को छोटे पदों के साथ सीमित स्थान दिया गया है, ऐसे में चर्चा होने लगी है कि विधायकों के चहेतों को तवज्जो न मिलने से आगामी समय में भाजपा को नुकसान उठाना पड़ सकता है. कार्यकारिणी में भाजपा ग्रामीण अध्यक्ष के चेहेते, विधायक अजय विश्नोई, सुशील इंदु तिवारी, संतोष बरकड़े, नीरज सिंह लोधी के समर्थकों को सीमित स्थान दिया गया है. भाजपा ग्रामीण की नई कार्यकारिणी के ऐलान के बाद राजनैतिक गलियारों में चर्चाएं तेज हैं कि संगठन में सांसद की पकड़ लगातार मजबूत होती जा रही है, जबकि विधायकों को छोटे पदों से ही संतोष करना पड़ रहा है. गौरतलब है कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की सहमति के बाद भाजपा जिला ग्रामीण की कार्यकारिणी घोषित की गई जिसमें 21 चेहरों को स्थान दिया गया है. इनमें 7 उपाध्यक्ष, 2 महामंत्री और 8 जिला मंत्री शामिल हैं. वहीं लोक निर्माण मंत्री राकेशसिंह के करीबी पुष्पराज सिंह बघेल को कार्यकारिणी में शामिल किया गया है.

आरडीवीवी में कर्मचारी संघ में दो फाड़

नैक द्वारा प्रदत्त ए ग्रेड की रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय इन दिनों कर्मचारी संघ के हुए दो टुकड़ों की वजह से सुर्खियों में आ चुकी है. ये संभवतः पहली बार हुआ है जब आरडीवीवी में कर्मचारी संघ में आपस में विरोध शुरू हुआ हो. आलम ये है कि कर्मचारी संघ से जुड़े एक कर्मचारियों के समूह ने हड़ताल समाप्त कर दी है तो वहीं दूसरी ओर कर्मचारी संघ के दूसरे ग्रुप ने हड़ताल जारी रखने का फैसला लिया है. आरडीवीवी परिसर में चर्चाएं हैं कि कर्मचारी संघ के अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह पटैल द्वारा कर्मचारियों को विश्वास में लिए बिना आरडीवीवी प्रशासन को आंदोलन स्थगित करने के संबंध में पत्र सौंप दिया गया. बस फिर क्या था अध्यक्ष के इस फैसले का कर्मचारी संघ के अन्य कर्मचारियों ने विरोध कर दिया और फिर विवि के मुख्य प्रशासनिक भवन के सामने कर्मचारियों और पेंशनर्स की आमसभा बुलाकर निर्णय सुना दिया कि बीते 18 दिनों से चल रहे आंदोलन को समाप्त नहीं किया जाएगा. विरोध कर हड़ताल को जारी रखने में कर्मचारी संघ के महासचिव, कार्यकारिणी के अधिकांश सदस्य शामिल हैं. इस तरह कर्मचारियों ने कर्मचारी संघ के पत्र को अमान्य घोषित कर दिया जो अध्यक्ष ने हड़ताल समाप्त करने जारी किया था. उधर विश्वविद्यालय के 14 सेवानिवृत्त कर्मचारियों के पेंशन प्रकरण तैयार हो चुके हैं जिन्हें खुद कुलसचिव डॉ. आरके बघेल शुक्रवार को लेकर भोपाल रवाना हुए. फिलहाल संघ में चल रही आपसी खटर पटर का फायदा विश्वविद्यालय प्रशासन को मिलता नज़र आ रहा है.

यह बचतोत्सव है या खर्चोत्सव!

बिहार का चुनाव सामने है और बाग-बाग है बीजेपी! जीएसटी की दरें कम करने के अलावा स्लैब 4 से घटकर 2 कर दी गई है. प्रधानमंत्री ने दिवाली पर खुशखबर देने का वादा किया था लेकिन नवरात्रोत्सव में ही यह कदम उठाते हुये देशवासियों को बचतोत्सव का संदेश दिया है. यदि यह बचत का उत्सव है तो लोग बैंक जाकर रिकरिंग डिपाजिट या फिक्स डिपाजिट में रकम जमा कराने जाएं, डाकघर बचत बैंक में नया खाता खोलें लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है. जनता को संदेश है कि जीएसटी में राहत को वह अपनी बहुत बड़ी बचत समझे और पूरी तबियत से बचतोत्सव का जश्न मनाए. 10 रुपये वाला बिस्किट का पैकेट 9 रुपये का हो गया इसलिये भरपूर बिस्किट खाओ, नमो के गुण गाओ! कार और टूव्हीलर के दाम में जीएसटी रियायत मिल गई तो घर में क्यों बैठे हो. सीधे शोरूम जाओ और मनपसंद गाड़ी ले आओ. दोनों हाथ से खर्च करो और बोलो कि बचतोत्सव मना रहे हैं. यह बचतोत्सव बिजनेस को बढ़ावा देने के लिये है. ज्यादा बिक्री होगी तो प्रोडक्शन भी ज्यादा करना होगा. मैन्युफैक्चरिंग अधिक हुई तो उद्योग व्यवसाय में बूम आ जाएगी. बुम का मतलब है कि जबरदस्त तेजी या उठाव! मुंबईया भाषा में कहते हैं- काय को खाली पीली बोम मारता? अब वहां के लोग भी झूम कर बाजार में आई बूम का स्वागत करेंगे. छिद्रान्वेषी या दोष निकालनेवाले कहेंगे कि यह उत्सव है अथवा 2017 में की गई गलती का परिमार्जन या सुधार? जब 28 प्रतिशत तक जीएसटी वसूल किया गया तब रहम नहीं आया. लाखों छोटे व्यापारियों की पीड़ा नहीं समझी गई. पहले 8 वर्षों तक बेरहमी से गब्बरसिंह टैक्स का हंटर मारते रहे. अब मरहम लगा रहे हैं.

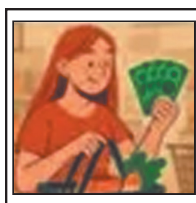

> जब 28 प्रतिशत तक जीएसटी वसूल किया गया तब रहम नहीं आया. लाखों छोटे व्यापारियों की पीड़ा नहीं समझी गई. पहले 8 वर्षों तक बेरहमी से गब्बरसिंह टैक्स का हंटर मारते रहे. अब मरहम लगा रहे हैं. ज़ुल्म के बाद मेहरबानी, यही है राजनीति की निशानी पिछली बातों को लेकर मत करो तकरार क्योंकि अब आया है ऐतिहासिक सुधार!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

पति को कह दिया पालतू चूहा इसी मुद्दे पर तलाक हुआ

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने एक व्यक्ति के तलाक के आवेदन को मंजूरी दे दी. अदालत ने माना कि पत्नी का अपने पति को पालतू चूहा कहना क्रूरता है. यह तलाक का आधार बनता है.

हमने कहा, चूहा कहने से पति को बुरा क्यों लगा? चूहा तो गणेशजी का वाहन है. पत्नी उसे मूषकराज कहती तो शायद वह बर्दाश्त कर लेता! आपको याद होगा कि जब सिक्यारा टनेल में मजदूर फंस गए थे और बड़ी-बड़ी विदेशी मशीनों के ब्लेड चट्टान काटने में टूट गए थे तब रैटमाइनर कहलाने वाले कुशल श्रमिकों ने चट्टानों को अपने औजारों से खुरचकर रास्ता बनाया था और उन फंसे हुए लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला था. चूहे के समान चट्टानों को फोड़नेवाले इन रैट माइनर्स या चट्टानफोडवा को सम्मानित व पुरस्कृत किया गया था. पुरानी फिल्म दिल्ली का ठग में किशोरकुमार ने नूतन को छेड़ते हुए गाया था सीएटी कैट, कैट माने बिल्ली, आरएटी रैट, रैट माने चूहा, दिल है तेरे पंजे में तो क्या हुआ!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, इंसान को चूहा कहना उसका अपमान करना है. इसका मतलब होता है डरपोक, कायर या बुजदिल. पति अपने माता-पिता का आज्ञाकारी था तो पत्नी ने उसे पालतू चूहा कहकर अपमानित किया. पत्नी का दबाव था कि माता-पिता को छोड़ो और मेरे साथ अकेले रहो. घर में पार्टीशन कर पाकिस्तान बनाओ.

हमने कहा, यदि पति उसकी बात मानकर वृद्ध माता-पिता को बेसहारा छोड़ देता तो क्या वह पत्नी का पालतू चूहा या जोरू का गुलाम नहीं कहलाता? किसी प्राणी से पति की तुलना करना उसे अपमानित करना है.

हमने कहा, महाराष्ट्र में वाघ, लांडगे, कोल्हे, कुत्रे, मांजरे, माकोड़े, नागदेवते जैसे सरनेम हैं. अपने ऐसे उपनाम पर लोग गर्व करते हैं. चूहे के लिए चूहेदानी है तो इंसान के लिए मच्छरदानी! चूहा बड़े परिश्रम से बिल बनाता है और सांप उसमें रहने आ जाता है. चूहा या तो मोटा होता है या मरियल! हिंदी में कहावत है- काजी के घर के चूहे भी सयाने!

पड़ोसी ने कहा, यदि पत्नी अपने पति को शेर कहती तो वह खुश हो जाता. उसने पालतू चूहा कहा तो तलाक हो गया.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12035

- डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. ठंडी सांस, बेदना क्लेश शोक आदि का सूचक उद्?गार 2. दमन किया हुआ (सं) 3. राय, सम्मति, वोट 4. गिलौरी, संकल्प 6. पलकों का खुलना और बंद होना 7. गंदे पानी की निकासी का मार्ग (अं.) 8. पूजा करने वाला 9. संपत्ति, धन, दौलत 10. नमूना 11. पुरव (सं.) 13. भीगा हुआ, तर सना हुआ 14. अनाथ (उर्दू) 15. हिम्मत, हौसला 16. सहायता (उर्दू) 17. स्वयं, खुद आदरसूचक संबोधन

बाएं से दाएं

1. आनंदपूर्ण, आनंद से भरा हुआ 5. अल्प, थोड़ा (सं.) 6. कलह, तकरार, लड़ाई 8. पुत्र 9. निरा, एकदम 10. प्रसिद्ध शिकारी पक्षी 11. किसी व्यक्ति को आदेश आदि देने का अधिकार देना (सं.) 12. नकल करने वाला 15. चार वेदों में से तीसरा वेद 17. अपने ऊपर बीतने या गुजरने वाली घटना अथवा बात 18. सीमा, मर्यादा 19. कसम, सौगंध 20. अभिप्राय, मनोरथ (उर्दू)

Solution 12034

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी,मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक तनाव रह सकता है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कर्मचारियों के सहयोग से कार्यो में सफलता मिलेगी, चिन्ता का निवारण होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कमी का अनुभव होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में सफलता, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शिक्षा अच्छी रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा के योग हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शरीर से दुबला पतला किन्तु फुर्तीले स्वाभाव का होगा. स्वास्थ्य बचपन में कुछ नरम गरम रहेगा. बाद में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. किसी नये ढंग की तकनीकी शिक्षा प्राप्त करेगा. माता पिता का भक्त होगा.

मेष- वाहन चलाते समय सावधानी रखें. नये समीकरण सामने आयेंगे. अत्याधिक विश्वास कष्टप्रद हो सकता है. पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

वृषभ- किसी परम मित्र का सहयोगबना रहेगा. पैसा प्राप्त होगा. ऐसा कोई कार्य न करें, जो आपके लिये नुकसानदायक हो. सुख शांति रहेगी.

मिथुन-आर्थिक क्षेत्र में प्रगति होगी. अधिकारी वर्ग सहयोग करेंगे. पारिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी. कामकाज में लगन और निष्ठा बनी रहेगी.

कर्क-स्वास्थ्य एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. लापरवाही करने पर स्वास्थ्य कष्ट होगा. अत: खान पान के प्रति उचित ध्यान देना हितकर रहेगा.

सिंह- उत्साह में कमी रहने से कोई महत्वपूर्ण कार्य अधूरा रह सकता है. धार्मिक रूचि रहेगी. कामकाज बनने का योग प्रबल है. साहस संयम रखें.

कन्या- भावनात्मक स्थितियों से बचने का प्रयास करें अन्यथा कोई परेशानी आ सकती है. परिश्रम एवं भागदौड़ अधिक होगी. यात्रा संभाव्य है.

तुला- रहन सहन के स्तर में सुधार होगा. पारिवारिक सुख एवं सहयोग बना रहेगा. निजी पुरूषार्थ बना रहेगा. दूरगामी परिणाम सामने आयेंगा.

वृश्चिक- पारिवारिक मान सम्मान प्राप्त होगा. सुख संतोष बना रहेगा. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. यश प्राप्त होने का योग है.

धनु- व्यवसायिक कार्य में प्रगति होगी. पत्राचार करते समय सावधानी रखें. निजी पुरूषार्थ रहेगा. जमीन जायजाद से लाभ प्राप्त होने का योग है.

मकर- अतिथि सत्कार होगा. व्ययभार बढ़ेगा. धार्मिक आयोजन होगा. मांगलिक कार्यो में शुभ परिणाम सामने आयेंगे. यश मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी.

कुम्भ- व्यापार व्यवसायमें सफलता मिलेगी. पारिवारिक सुख साधन बढ़ेंगे. आर्थिक कार्यो में चल रहा प्रयास सार्थक होगा. रोगी की चिंता होगी.

मीन- आर्थिक मामलों में किसी प्रकार का जोखिम न उठायें. आवेश से बचने का प्रयास करें. पारिवारिक जबावदारी आपके उपर आ सकती है.

उदयकालीन ग्रह चाल

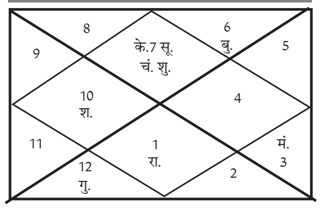

पंचांग

रा.मि. 07 संवत् 2082 आश्विन शुक्ल सप्तमीं चन्द्रवासरे दिन 12/26, मूल नक्षत्रे रात 3/33, सौभाग्य योगे रात 11/36, वणिज करणे सू.उ. 6/4, सू.अ. 5/56, चन्द्रचार धनु, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल सप्तमीं को मूल नक्षत्र के प्रभाव से रूई, में तेजी होगी. चना में मंदी की चाल रहेगी. गुड़ खांड़, हींग, लालमिर्च, सरसों तिल, आदि का रूख रहेगा. शेष वस्तुओं में बाद की चाल चलेगी. भाग्यांक 4973 है.

SUDOKU 7167

	9				4			7
					7	9		
8								
4		5	8					
3				1				2
					9	7		6
								4
		3	5					
2			6				8	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7166

7	8	5	2	6	3	1	4	9
4	3	1	9	7	5	8	2	6
2	6	9	1	4	8	7	5	3
3	1	4	6	8	9	5	7	2
9	5	8	7	2	4	6	3	1
6	7	2	5	3	1	9	8	4
5	2	7	3	9	6	4	1	8
1	4	6	8	5	2	3	9	7
8	9	3	4	1	7	2	6	5